मौत आ पहुँची है मुझ तक

मूल काव्य (गुजराती) : डॉ. हसमुख बाराडी
हिन्दी अनुवाद : हेमन्त शुक्ला

मौत आ पहुँची है मुझ तक ।
पिकाडिलि[१] के फव्वारों पर
कबूतरों की फड-फडाहट
श्वेत हिमपत्तियों की सरसराहट
म्यूनिक[२] की थिरकती रात
मूरतें[३] मोढेरा की-
तेरी आँखोकी शून्यता ।

दो पैरों पर सीधे खडे हो मैंने अभी
सिर अपना उँचा उठाया ही था
कि
उपर से हुई वर्षा
मेरी रीढ के पुर्जों-पुर्जों की ।
अंटियाँ खेल रहा होगा कोई उनके साथ ?
हवामें इधर-उधर फेंके जा रहे अपने अंगों की
बोरी भर अपने कंधो पर लादने जा ही रहा था
कि
मेरी नस-नसमें
अनजान रसायण घुलकर दौडने लगे ।
लोगोंने सिसकते हुए
दो आँसू दंभ के रोए -
तब लगा
मौत आ पहुँची है मुझ तक ।

रास्ता आधा भी कहाँ तय हुआ है ?
पाँच के पंजे में पैर भिडा
पीठ भी मैने अभी टिकाई नहि
फिर शून्य के झूले झूलना भी बाकी है
अभी ।

उछलती लहरों को बॉहो में ले अभी
बीच समंदरमें नाव खेना है मुझे ।
जगमगाती तेजकिरण बन
परछाइयों को मिटा देना है ।
पंछियों की चहचहाटों की उंगली से
रेखा को रंग-रुप देना है ।
लहू के थपेडों में बहकर
तेरी आँखो के झरोखों से टपकना है ।
चेहरा तेरी ओर मैंने अभी घुमाया ही था
कि मौत...

दूरके उस गॉव के छोर पर
मिट्टी के ओटे पर बैठा शिशु
सामने कबूतरों को निहार रहा है ।
अँधेरे, कँटीले जंगल में
कबूतरों के पंख खींचे जा रहे है ।
मंदिरमें किशनजी की आँखे
राधा की मुरली बजा रही है ।
पनघट के बरगद पर
टूटी हुई स्लेट अभी काँप रही है ।
गढकी उस उंची कगार पर
घूँ-घूँकर घूम रहा है भौंरा ।
सुनार की दहलीज के आगे
खिलते ही जा रहे है फूल पीले कनेर के...
तपती हुई तेरी नजरों से तब
उसकी प्यास यूं उडी
कि -

पैरों तले सारे जग को किया मैंने
विवेकानंद खडक पर बैठा पालथी मार ।
बोधिगया के वृक्ष की पत्तियाँ गिनी ।
सोमनाथ[४] के घंटारव से कान भरे ।
कोणार्क के सूर्यमंदिर पर
झारे समंदर के फोडे ।

आल्प्स की उँचाइयों को नाप
खाइयों की चीकटता से भीगा ।
उगते और ढलते सूरज को
एक साथ आँखो में भरा मैंने ।
पाईप की बदबूदार निकोटिन,
न्यायासनके रखे हुए इलजाम,
रौबदार, अफसराना चेहरे,
तेरी बर्फीली आँखो की छाया...
मेरी जिन्दगी से
सिनेमा की सी सनसनी मांगी है तुमने ।
तराज़ूओं में तोल-तोलकर मुझे
वजन की एक बाट बना दिया है तुमने ।
और आज जब कि मौत आ पहुँची है मुझ तक -
कोई पुरुष, कुछ वचन मानकर
मेरे साथ भूत कृदन्त लगा दिया है तुमने ।

मैं तो पद्य की लय बनना चाह ही रहा था कि
मेरी रीढ के पुर्जों को ढीला कर
तुमने चारों ओर यूं उछाला -
कि
उत्तरायण की राह देखते-देखते
इच्छा-मृत्यु का वर पाने को
राज्यासनों का त्याग किया मैंने ।
और उसके बाद भी
धर्म की धुरा को कंधो पर उठाने
मैं जब आगे बढा
तब ढेर हो, धराशायी हुआ
अपनी रींढ के पुर्जे-पुर्जे पर ।
मैंने गत वर्षोंका सी.टी. स्केन कर देखा
जज़्बाती होना मुझे पसंद नहि
मगर
मेरा प्रतिबिंब तेरी गिली आँखो में

नजर नहि आता -

और

अकल तो मारी भी जा सकती है ।

क्यूँ कि तीर की सननाहट की तरह जिया हूँ मैं -

खींची हुई प्रत्यंचा के निशान

बन गए हैं मेरे कान पर ।

तीरों से खचाखच भरा तूणीर

अपने कंधे पर धारण अभी कर ही रहा हूँ

कि

मौत आ पहुँचती है मुझ तक ।

जुआरी[५] दस्तेयव्सकी के पांसे

चेहफ[६] का ट्यूबरक्यूलोसिस

बर्टोलट ब्रेश्ट[७] की आवारगी

इलियट[८] की तीसरी आवाज

आँखो की रंगभरी भूमि पर

खेलता वह, छरहरा बादल[९]

फ्रान्सिसी जमीन को रौंदता

स्वप्नों को सजाता ब्रूक[१०]

बरडा[११] के पहाडों के बबूल...

उबड-खाबड रास्ते पर खडखड़ाती मेरी जिप...

जिंदगी का स्पर्श अभी तो पा रहा हूँ मैं

मेरी आँखो में वह ठीक से बैठी भी नहि अभी

कि

मौत आ पहुँचती है मुझ तक ।

मुझे तो मृत्यु का स्वागत करना है

किसी उत्सव की भांति -

तरह-तरह के ढोल, नगाडे और शहनाईयों बजवानी है ।

आमने-सामने बैठ कविताएं गानी है ।

समझदारी के दो शब्द भी उसे कहने है ।

उसका शिलालेख बनवाकर

गिरनार[१२] की चोटी पर जडवाना है ।

हस्तरेखाओं के संदेशों के अर्थ

पाणिनि की तरह बूझना है ।
तेरी बात किसी ने तुझसे नहि कही
और मेरी बात सूनने को
नहि हैं कान तेरे पास ।
मेरे माइक्रोफोन और कैमरे
तेरी सोने की तिजोरीमें बंद है ।

दियों से टिमटिमाती राह पर मैंने
थिरकती रौशनी में
आम्रपालि। का नृत्य देखा था ।
पृथ्वीवल्लभ। बनकर मैंने
मिनल। को मनाया था ।
मुहल्लो की नुक्कड पर
चार सौ तीस नंबर के बिजली के खम्भे पर
मैंने एक सपना। कुरेदा था ।
काला कम्बल। ओढकर
रिश्तों की दरारों को तलाशा था मैंने ।
टेबल पर सिर रखकर
रजिस्टर्ड लेटर की राह देख रही थी तू
तब स्त्राविन्स्की[१३] का संगीत
तेरे बहरे कानोंमें भर दिया था मैंने ।
दो-दो जशुमतियों। की चीखो को सून
विनायक। की बांसूरी छिन ली मैंने -
और गांधारी। के घी से भरे सौ कुण्डोमें पैदा हो
खून से सजे हुए मेरे शरीर को
इस जग की हवा का प्रथम स्पर्श हो रहा था -
और तब
अगर मौत मुझ तक आ पहुँचे तो
मैं कविता न लिखूं तो और क्या करुं ?

मैंने अधखुले किवाड पर खडी
अंसुवन से सनी आँखो को चाहा है ।
तुम्हारी कैंची से चांद। को काटकर
तुम्हारी चोली के उपर लगाया है मैंने ।

तुम्हारे संगेमरमरके श्वेत भीने लशकारों से
उँचे आसमान तक पहुँचा हूँ मैं ।
तुम्हारे शब्दों की बाढ की झूंझलाहटमें
मेरी आँखोने किए है कई रतजगे ।
तुम्हारे मासूम, खिलखिलाते सपनोंने
बढती हुई उम्रमें मेरा साथ दिया है -
और
इसी लिए आज कह रहा हूँ तुमसे -
आँकडा पचास का कुछ कम नहि होता ।
पर मैं डरा नहि हूँ कभी भी तुमसे ।
सीधे सीने पर ही जिंदगी को झेला है मैंने ।
नायग्रा फोल्स में नहाया हूँ
और पानी की बूँद-बूँद को भी तरसा हूँ ।

अठारह अक्षौहिणी सेनाएं खडी थीं आमने-सामने ।
उन अर्जुनों को तब
कर्म का धर्म मैंने ही समझाया था ।
जिसस क्राईस्ट के क्रोस जैसे
उस स्टूल का भार
अकेले उस जनार्दन[1] के कंधों पर ही न था ।
मुझे तो अभी भी शकार[1] को ईजी-चेयरमें बिठाना है ।
सिझर[1] की मैयतमें दो शब्द कहने है ।
अर्थ को चूस चूसकर शब्द को तराशना है ।
और शब्द को कुरेद-कुरेदकर
उसे पवनमें बहाना है ।
मस्तीभरी, रंगीन रंगभूमि पर
अनेक विश्वों को अवतारना है ।

तुम पूछ सको तो प्रश्न करो
किन्तु उत्तर किसी का भी मेरे पास नहि है ।
व्याकरण के नियमों के अनुसार का गद्य
पधारिए और पधारना के बीच का जीवन
चौरासी लाख अवतारों के फेरे
पॉव में मेंहदी रचा

तुम चाहे घूम लो ।
मुझे...
एकाध रेखा -
कोई लय -
हल्की मुस्कुराहट...
जी भर के लेने दो
इससे ज्यादा उम्मीद की हिम्मत भी रही नहिं ।
तुम्हें याद तो है न अभी
कि
मौत मुझे -
मेरी रीढ के पुर्जे पुर्जे पर
उसने दौड लगाई थी
उसकी कुतर-कुतर की कुतराहट
मेरे कानों को बहरा कर गई है ।

उसकी परछांईमें शायद तुम्हें नजर मैं न आउं
मेरा आंतर-संवाद तुम्हें सुनाई न दे,
तुम्हारी गर्म साँसे कहीं न टकराएं,
मेरी हँसी से तुम्हारे दिलकी दीवारें न खडखडाऐं
तो समझ लेना
कि साबरमती[१४] की कोरी रेतमें
उसने मुझे ठूंस दिया है ।
उसके उँचे पुल पर ठहरकर
दूरबीन के काँच से तुम्हें अगर देखना हो
तो किसी पीले पड गए अखबार में
काली स्याही के धब्बे सा
मैं तुम्हें दिखाई दूँगा ।
कोन आइस्क्रीम खाते हुए
तुम्हारी जीभसे लगी हुई चिकनाहट
टेलिफोन की सनसनी जैसी लगेगी ।
पर कॉकरिया[१५] की बेन्च पर बैठा मैं
अपनी रीढ के पुर्जे ढूँढ रहा हुँगा ।

पचास वर्ष के अपने ईस समय खंड को
गले तक आ रुकी चीख से
मैंने बॉध लिया है
इसके प्रतिघोष को बहरा करके ।
और, इस तरह
तुम्हारें भोथे तीरों की शैया पर
मुझे सुलाकर
मेरी चमडी को खरोंचने की तुम्हारी नीयत
मैं जान गया -

और तब
मौतने उठाए लौटते हुए कदम ।
शीतल लहर को आने दो अब
मुझ तक उसे पहूँचने दो
कलमधारी
वनकुमार होकर ।

---

1. Piccadeli Square in London
2. City in West Germany
3. Suntemple of Modhera in Gujarat
4. Somnath temple in Western Gujarat
5. Russian Novelist Dostyevsky
6. Playwright Anton Chekhov
7. German Playwright Bertolt Brecht
8. English Poet T. S. Eliot
9. Bengali Dramatist Badal Sircar
10. English Stage Director Peter Brook
11. Barada Hills in Gujarat, near Porbandar (Auther's Birth Place)
12. Girnar mountains in Gujarat
13. Stravinsky, the Russian Music Composer
14. Sabarmati, the river in Ahmedabad
15. Kankaria, the lake in Ahmedabad

* Esteric stars are characters of auther's plays

• • • • •